परमेश्वर की व्याख्या करते नाम

यद्यपि परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, फिर भी हमें पता है कि उसका चरित्र किसके जैसा है। लोगों से उसके व्यवहार के ढंग से हमें उसके स्वभाव का पता चलता है। परमेश्वर के चुने हुए लोग जब उसकी असीमित शक्ति तथा सामर्थ से परिचित हो गए, तो कभी-कभी वे उसे उसके महान गुणों को दर्शाते नाम देने लगे।

''भय''

उत्पत्ति 31:42 में परमेश्वर को *pahad* अर्थात ''भय'' के रूप में वर्णित किया गया है। इस पद में व्यक्त ''भय'' शब्द वह नहीं है जो आम तौर पर ईश्वरीय भय या भक्ति (*यिराथ*) का संकेत देता है, बल्कि वह शब्द है जो सामान्यत: आतंक तथा भय को दर्शाता है (देखिए व्यवस्थाविवरण 11:25; 28:67; 1 शमूएल 11:7)।

स्पष्टत: इसहाक ने परमेश्वर के उद्देश्य की उपेक्षा करने का प्रयास किया कि आशीष पहलौठे पुत्र एसाव को नहीं, बल्कि छोटे पुत्र याकूब को दी जाए। उनके जन्म से पहले ही, परमेश्वर ने प्रकट कर दिया था कि ''बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा'' (उत्पत्ति 25:23)। उस भविष्यवाणी के बावजूद इसहाक ने परमेश्वर की इच्छा को मानने के बजाय अपनी प्रचलित परम्परा के अनुसार पहलौठे पुत्र को आशीष देने की ठान रखी थी। याकूब की चालाकी से, इसहाक ने उसे एसाव समझकर आशीष दे दी थी। यह अहसास होने पर कि, परमेश्वर की इच्छा में बाधा डालने के बजाय उसने अपनी इच्छा में ही बाधा डाली थी, इसहाक कांप उठा था (उत्पत्ति 27:33)। इस कांपने को सम्भवत: उस नाम में देखा जाता है जो उसने परमेश्वर को दिया-*pahad* अर्थात ''भय।'' यह अहसास होने पर कि उसने अपरिवर्तनीय परमेश्वर के उद्देश्य को बदलने का प्रयास किया है, वह भय से आतंकित हो गया था।

यद्यपि बाद में इसहाक ने पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही किया था, परन्तु उसे वह कांपना कभी नहीं भूला। उसने याकूब को अपना अनुभव बताया, जिससे पता चलता है कि याकूब को *pahad* नाम का कैसे पता चला। शपथ लेते हुए, याकूब ने स्वयं इस नाम से शपथ ली थी।

''याकूब का शक्तिमान ईश्वर''

पुराने नियम में उत्पत्ति 49:24 में परमेश्वर की एक और परिभाषा मिलती है: *अबीर याकोब,* अर्थात ''याकूब का शक्तिमान ईश्वर।'' स्पष्टत:, *अबीर* अर्थात ''सामर्थी, शक्तिमान, साहसी'' का अर्थ परमेश्वर की पिछली दो परिभाषाओं, *एल* अर्थात ''सामर्थी,'' और *शद्दै* अर्थात ''सर्वशक्तिमान'' से मिलता-जुलता है।

अबीर शब्द का पहली बार इस्तेमाल

अबीर अर्थात ''शक्तिमान ईश्वर'' का पहली बार इस्तेमाल यूसुफ को अपने पिता से आशीष देते हुए मिलता है। इस्राएल ने कहा था कि यूसुफ आश्वस्त हो सकता है कि उसके वंशजों की सम्भाल *अबीर याकोब* अर्थात ''याकूब के शक्तिमान ईश्वर'' द्वारा होगी। *अबीर याकोब* की सामर्थ से, यूसुफ के उत्तराधिकारियों के तीरों तथा हथियारों में शक्ति मिलनी थी। यूसुफ की संतान अर्थात इफ्राइम और मनश्शे के गोत्र सचमुच शक्तिशाली लोग थे। याकूब की भविष्यवाणी के बहुत वर्षों बाद, ''यहोशू ने, क्या एप्रैमी क्या मनश्शेई, अर्थात यूसुफ के सारे घराने से कहा, हां तुम लोग तो गिनती में बहुत हो, और तुम्हारी बड़ी सामर्थ्य भी है, इसलिए तुम को केवल एक ही भाग न मिलेगा'' (यहोशू 17:17)। इसका कारण यह था कि ''याकूब का शक्तिमान ईश्वर'' यूसुफ के घराने के साथ था।

अबीर शब्द के चार अन्य संदर्भ

ईश्वर के वर्णन के लिए पुराने नियम के चार अन्य संदर्भ *अबीर* शब्द का इस्तेमाल करते हैं:

1. *अबीर, अर्थात मसायाह को लाने में सामर्थी।* दाऊद ने *अबीर याकोब* के पास मन्नत मानी कि वह तब तक चैन से नहीं बैठेगा जब तक परमेश्वर के लिए निवास स्थान न बना ले (भजन 132:2-5)। दाऊद के पवित्र तथा नि:स्वार्थ संकल्प के उत्तर में, प्रभु ने बदले में दाऊद के साथ शपथ ली ''कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे लिए एक निज पुत्र को बैठाऊंगा'' (भजन संहिता 132:11)। प्रभु ने शपथ ली कि वह अपने इस निश्चय से ''न मुकरेगा'' (भजन 132:11)। इसका सुपरिणाम यह हुआ कि परमेश्वर ने यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में भेजा, उसे मुर्दों में से जिलाकर, स्वर्ग में दाऊद के आत्मिक सिंहासन पर बैठाया। पतरस ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के इस रोमांचकारी चरम का वर्णन पिन्तेकुस्त के दिन उसे सुनने वाले हज़ारों लोगों के सामने किया: ''परमेश्वर ने उस [अर्थात दाऊद] से शपथ खाई थी कि वह उसके वंश में से एक व्यक्ति को उसके सिंहासन पर बिठाएगा'' (प्रेरितों 2:30)। इस प्रकार *अबीर याकोब* अर्थात ''याकूब के शक्तिमान ईश्वर'' ने दिखाया कि वह दाऊद का ही शक्तिमान परमेश्वर है।

2. *अबीर, यरूशलेम को शुद्ध और बहाल करने में सामर्थी।* यशायाह के समय में यरूशलेम का भौतिक नगर ''एक वेश्या'' और ''हत्यारों'' का निवास स्थान बन चुका था (यशायाह 1:21)। हाकिम ''हठीले और चोरों से मिले'' हुए थे और ''घूस'' लेते थे

(यशायाह 1:23)। परन्तु, याकूब के सर्वशक्तिमान ने घोषणा की, ''मैं तुम पर हाथ बढ़ाकर तुम्हारा धातु का मैल पूरी रीति से भस्म करूंगा'' (यशायाह 1:25)। इस्राएल के सर्वशक्तिमान ने विश्वासी न्यायियों को बहाल करने की प्रतिज्ञा की थी ताकि उसके बाद यरूशलेम को ''धर्मपुरी और सती नगरी'' कहा जाए (यशायाह 1:26)। सिय्योन को न्याय से और इसके परिवर्तितों को धर्म से छुड़ाया जाना था।

नये नियम की कलीसिया के आने से, आत्मिक यरूशलेम के प्रत्येक निवासी द्वारा नये सिरे से जन्म लेकर नया मन व नई आत्मा पाने से याकूब के सर्वशक्तिमान ने अपना वचन पूरा किया। यरूशलेम के पुरातन सांसारिक नगर से कहीं अधिक शानदार एक नगर अर्थात आत्मिक नगर जो कि कलीसिया है और जिसका वर्णन ''ऊपर की यरूशलेम'' (4:26) और ''स्वर्गीय यरूशलेम'' (इब्रानियों 12:22) के रूप में किया गया है, के बारे में कहा गया था।

3. *अबीर, गलतियों को सही करने में सामर्थी।* परमेश्वर के लोगों पर प्राचीन समय के विजेताओं का अत्याचार हो या किसी भी समय किया गया अन्याय, याकूब का सर्वशक्तिमान दमन करने वालों को उनका ''अपना लहू'' पिलाने में सामर्थी है (यशायाह 49:24-26; प्रकाशितवाक्य 16:4-7)। इसलिए, ''किसी प्रान्त में निर्धनों पर अन्धेर और न्याय और धर्म को बिगड़ता'' देखकर निराश होने की आवश्यकता नहीं है (सभोपदेशक 5:8), क्योंकि *अबीर याकोब* कभी मरता नहीं।

4. *अबीर, स्वर्ग में ले जाने में सामर्थी।* एक ऐसा नगर बनाने के लिए जिसके फाटक ''सदैव खुले रहेंगे'' (यशायाह 60:11) एक *अबीर* अर्थात सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवश्यकता है। कहते हैं कि इस नगर में ''दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चांदनी के लिए चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिए सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा'' और परमेश्वर ही ''सदैव की ज्योति'' होगा (यशायाह 60:19, 20)। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही इस योग्य है कि पापी आत्माओं को इस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से बदल दे कि उन्हें ''सदा के घमण्ड का और पीढ़ी पीढ़ी के हर्ष'' के रूप में जाना जाए (यशायाह 60:15)।

फिर, हम देखते हैं, कि पवित्र आत्मा ने *अबीर* अर्थात ''शक्तिमान ईश्वर'' शब्द का प्रयोग यूसुफ को आशीष देने, मसीह को राजा बनाने, यरूशलेम को शुद्ध और बहाल करने, और हर बुराई को दूर करने और स्वर्ग की रचना में परमेश्वर की सामर्थ का वर्णन करने के लिए किया है।

''इस्राएल का पत्थर''

उत्पत्ति 49:24 में परमेश्वर को *एबिन यिस्राएल* अर्थात ''इस्राएल का पत्थर'' कहा गया है। एक पत्थर के रूप में परमेश्वर का यह प्रतिनिधित्व परमेश्वर की सामर्थ (अय्यूब 6:12) और दृढ़ता (अय्यूब 38:30) पर ज़ोर देता है।

शमूएल ने फलस्तीनियों के विरुद्ध इस्राएल के लिए परमेश्वर की सहायता के स्मरण के रूप में एक पत्थर का इस्तेमाल किया था। उसने इसे *एबेनेज़ेर* अर्थात ''सहायता का

पत्थर'' (1 शमूएल 7:12) कहा था। स्पष्टत: यह प्रार्थना करते हुए कि, ''मेरे लिए सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिसमें मैं नित्य जा सकूं; तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है, क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है'' (भजन संहिता 71:3) दाऊद के मन में भी सुरक्षा थी। यूहन्ना ने यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा की कि, ''यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है'' (1 शमूएल 2:2)। यशायाह ने यहोवा की महिमा उसे सनातन चट्टान कहकर की थी (यशायाह 26:4)।

जंगल में इस्राएलियों ने वह जल पीकर जिसे परमेश्वर ने एक चट्टान से चमत्कारिक ढंग से निकाला था (निर्गमन 17:6; भजन 78:15) उस आत्मिक चट्टान अर्थात मसीह से पीया जिसने उस समय के लोगों को मूसा के द्वारा आत्मिक शिक्षा दी थी (1 कुरिन्थियों 10:4, 5)। उनमें से अधिकतर से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था, क्योंकि उन्होंने आत्मिक शिक्षाओं के जल में से पीने से इन्कार कर दिया था। उन्होंने अपने उद्धार की चट्टान को ''तुच्छ जाना'' (व्यवस्थाविवरण 32:15)।

मसीह केवल पुराने नियम के समय ही आत्मिक चट्टान नहीं था, बल्कि यह भविष्यवाणी भी की गई थी कि वह नये नियम के दिनों में भी एक पत्थर होगा। दोहरे अर्थ में, नबियों ने कहा था, कि मसीह पत्थर होगा। वह गलत व्यवहार करने वाले लोगों के लिए ठोकर लगने का पत्थर होगा (यशायाह 8:14) और निर्माण के पत्थर के रूप में यहूदी निर्माताओं द्वारा ठुकराया जाएगा। ठुकराए हुए पत्थर के लिए दीवारों को जोड़कर कोने का सिरा बनना तय था (भजन 118:22)। यीशु के लिए इमारत के मुख्य पत्थर होने की भविष्यवाणी की गई थी: ''देखो, मैं ने सिय्योन में नेव का एक पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थर'' (यशायाह 28:16)।

भविष्यवाणियां पूरी की गई थीं। मसीहियत किसी कंकर, टुकड़े अर्थात *पैट्रास* पर नहीं बल्कि एक विशाल चट्टान, बड़े पत्थर अर्थात *पैट्रा* पर बनी है (देखिए मत्ती 16:16-18)। ''उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता'' (1 कुरिन्थियों 3:11)। विश्वास न करने वाले लोगों को वचन की आज्ञा न मानने पर मसीह के संदेश से ठोकर लगी (1 पतरस 2:7, 8)। यहूदी लोग, ''इस पत्थर पर'' गिरकर ''चूर-चूर'' होकर धूल की तरह ''पिस'' गए थे (मत्ती 21:44)। परन्तु, उसे ग्रहण करने वालों के लिए ''जीवित पत्थर'' के रूप में यीशु बहुत ही मूल्यवान अर्थात समय और अनन्तकाल के लिए उनकी ठोस पनाह बन गया था (1 पतरस 2:4, 7)।

''जलन रखने वाला''

कन्ना अर्थात ''ईर्ष्यालु'' शब्द की उत्पत्ति उस शब्द से हुई है जिसका मूल अर्थ रंगने की तरह, ''बड़े ज़ोरदार ढंग से लाल हो जाना'' होता है; इसका अर्थ किसी के मन में असर होने से उसके चेहरे के रंग का बदलना है। यूनानी शब्द *ज़ीलोस* अर्थात ''जलन'' उस शब्द से निकला है जिसका मूल अर्थ है ''उबालना।'' इसलिए परमेश्वर को *कन्ना* कहने में मन

की भावना पाई जाती है।

परमेश्वर को डाह अर्थात ईर्ष्या करने वाला कभी नहीं कहा गया, परन्तु जलन रखने वाला और कन्ना अर्थात ''जलनशील'' उसके नामों में से एक है (निर्गमन 34:14)। डाह, किसी दूसरे व्यक्ति को निकालने की ज़ोरदार इच्छा है, जो कि शैतान ही कर सकता है क्योंकि यह शरीर का काम है (गलतियों 5:21)। जलन अर्थात किसी दूसरे व्यक्ति के पद को पाने की ज़ोरदार इच्छा, शैतानी (प्रेरितों 13:45; रोमियों 13:13; गलतियों 5:20) या ईश्वरीय हो सकती है (2 कुरिन्थियों 11:2)। धुन ''भली बात में'' लगाना अच्छा और सही है (गलतियों 4:18) परन्तु स्वार्थ से नहीं।

सृजनहार परमेश्वर का दावा सही है कि लोग उससे प्रेम करें और उसके वफ़ादार रहें। वह मनुष्य के हृदय, प्राण, बुद्धि और शक्ति से कम किसी भेंट को स्वीकार नहीं करेगा (व्यवस्थाविवरण 6:4-6; मरकुस 12:30)। वह किसी दूसरे ईश्वर के बाद (निर्गमन 34:14; यशायाह 42:8); किसी सांसारिक राजा के बाद (प्रेरितों 5:29) और किसी सांसारिक वफ़ादारी के बाद (लूका 14:26) दूसरा स्थान नहीं लेगा अर्थात वह चाहता है कि लोग उसे प्रथम स्थान दें।

सृष्टिकर्त्ता के इस स्वाभाविक अधिकार को छीनने का अर्थ उस जलनशील परमेश्वर से विनाश के लिए कहना है, जिसके अधिकार में सभी मनुष्य हैं (व्यवस्थाविवरण 6:15) ''हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है'' (इब्रानियों 12:29; देखिए व्यवस्थाविवरण 4:24)। ''जीवते परमेश्वर के हाथों में [जिसका नाम ''जलनशील'' है] पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)।

सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि परमेश्वर का वर्णन उसके कुछ नामों से किया जाता है। वो वह परमेश्वर है जिससे डरना चाहिए, जो सर्वशक्तिमान है, सामर्थ का पत्थर है और ऐसा परमेश्वर है जो चाहता है कि लोग केवल उसी की उपासना करें। इन नामों को पूरी तरह से समझ लेने पर जिनसे उसका पता चलता है, हमारे दिमाग़ में यह तस्वीर साफ़ हो जाती है कि परमेश्वर कौन है, वह अपने लोगों से क्या चाहता है और हमसे क्या अपेक्षा करता है।